80

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-57-7

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 80
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

जेकर चुन तेकर पुन

सेमी गौभरमेन्टक सहयोगसँ साहित्यिक कार्यक्रमक आयोजन भेल। सेमी गौभरमेन्टक माने भेल जे निसचित रकमक रूपमे सरकारी सहायता भेटल आ जन सहयोग सेहो भेल। ओना, जन सहयोगक जेतेक आशा कएल गेल छल तइ रूपे सहयोग नहि भेटल, माने ई जे परिवारक जनसंख्याक हिसाबसँ सहयोगक आशा कएल गेल छल से नइ भेटल। ई कहब जे जनमे सहयोगक विचारक अभाव भऽ गेल अछि से बात नहि, अखनो लोकक विचारमे एहेन धारणा बनले अछि जे जाबे जनक सहयोग नहि हएत ताबे समाजिक काज नइ चलत। आ जँ समाजिक काजे नइ चलत तँ समाजक पहचान की बनत। आ जँ समाजक पहचाने नइ भेल तखन समाज केहेन अछि आ ओइ समाजक सामान्य जन केहेन अछि, से केना बुझब। सहयोगक धारणा रहितो सामान्य जनक सहयोग कम भेल। ओना, एकरा असहयोगक दृष्टिसँ नहि देखल जा सकैए। असहयोग भेल, बुझि कऽ सहयोग नइ करब। मुदा से नहि, साहित्यिक कार्यक्रमक महतकेँ कम बुझनिहार रहने, आर्थिक सहयोग कम भेल तँए ई कहब जे कार्यक्रममे कमी भेल सेहो नहि, किएक तँ गाम-गाममे चरिपहिया वाहन, ठीकेदार आ रंग-रंगक एजेन्ट सबहक बहबारिसँ नीक सहयोग भेटल। सेमी कार्यक्रम रहने सरकारी बेवस्था एते छल जे गामक चौकीदारकेँ

सुरक्षाक भार भेटल आ जनसेवकक माध्यमसँ सहयोग राशि भेटल। चौकीदार आ जनसेवक दुनू गामेक रहने कार्यक्रमक कमिटीक समक्ष अपन-अपन हाजरी पुरा छुट्टी लैत बाजल-

"हमहूँ तँ गौंए छी, तँए जँ जरूरी हुअए तँ खोज कऽ लेब। किए ते सरकारमे ते हमहीं ने कैफियत देबइ। मुदा गौंआँ होइक नाते एते जरूर सभ नजैरमे राखब जे अनगौंआँ पीहकारी दऽ कऽ ने जाए। जखने पीहकारी पड़त तखने हम ओझरीमे पड़ि जाएब, तँए एते हमरो निवेदन अछि।"

कार्यक्रमक प्रचार माध्यम नीक रहल। नीकक कारण भेल जे प्रचार तंत्रक सुविधा बढ़ने बेकतीगत रूपे सेहो सम्पर्क होइते अछि। गौंआँक एकेटा मंसा जे नीक कार्यक्रम हुअए। नीक कार्यक्रमक माने भेल नीक जुटानियोँ करब आ नीक मनोरंजनो करब।

राघव दिल्लीसँ गाम आएल छल, कुमार बिसवासक मंच ओ देखने, तँए मनमे अपनो जिज्ञासा रहबे करइ जे ओहने कार्यक्रमक आयोजन हुअए। प्रचार करैक भार राघव उठा लेलक। मन टोबैक रस्ता बुझले छइ। जे जेहेन मनक लोक हुनका ओहने बात कहि-कहि हड़-टुट्टा, टंग-टुट्टासँ लऽ कऽ कनाह-बहीर धरिक जुटानी नीक करबे केलक। समय सुभ्यस्त भेने आयोजनमे कोनो बाधा उपस्थित नहियेँ भेल। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ रहै-सहैक सेहो नीक बेवस्था भेल।

कार्यक्रम शुरू होइसँ आधा घन्टा पहिनेसँ मंचपर साहित्यकार, पत्रकार, रेडियो स्टेशनक कलाकार आ गमैया गीतकार-संगीतकारक आगमन हुअ लगल। अधिकांश लोकक संग अपन-अपन दूटा-चारिटा मुँह लगुआ रहिते अछि। ग्रुप बना सभ बैसबो केला आ अपन-अपन मुँह-लगुआक संग फुसराहैट सेहो करैये लगला।

असगरे राधेश्याम काका बीचमे बैसल चारू दिस तकैत रहैथ जे

किनकोसँ हमहूँ गप करी। मुदा गपोक तँ कान्ही होइ छै, स्तर होइ छै से कान्ही मिलबे ने करैन। तहूमे मनमे ईहो रहबे करैन जे गंभीर साहित्यकार सबहक जुटानी छी तँए जँ मंचपर गंभीरता नइ बरतब सेहो केहेन हएत। ओना, चुपा-चुपी नइ छल मुदा गुप-चुपी नइ छल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। से तँ छेलैहे। रेडियो स्टेशनक बदलू भाय सेहो रहैथ। मुदा ओ अपन ड्यूटीमे रहैथ तँए राधेश्याम काकासँ कनी हटल रहैथ। दू गोरेमे ने कनी दुरोसँ गप कएल जा सकैए मुदा जैठाम छत्ताक मधुमाछी जकाँ सौंसे मंचपर भन-भनी चलि रहल अछि, तैठाम कण्ठ फारि बाजलो तँ नहियेँ जा सकैए। ओना, बीचमे ईहो होइते अछि जे जेमहर आँखि-कान रहत ओमहुरका कनी फरिक्कोक बात सुनियोँ सकै छी आ देखियो सकै छी। मुदा लगले ईहो होनि जे गंभीरतोक तँ अपन-अपन विचार होइए। जखन साहित्यिक कार्यक्रममे आएल छी तखन तँ ओइ विचारक निमरजना करए ने पड़त। मुदा तैबीच एकटा प्रश्न तँ उठिये जाइन जे जखन कार्यक्रमक नियम पूर्वक घोषणा हएत तखन ने जे जेहेन छी से तेहेन गंभीरता प्रदर्शित करब। तइ बीच माने कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिने, तँ सभ सामान्य जन छी माने मनुख होइक नाते मनुख छी, मनुखक बीच बैसले छी तखन जँ कुशलो-समाचार नइ हुअए सेहो केहेन हएत...।

ओना, बीच-बीचमे राधेश्याम काका ईहो जरूर देखबे करैथ जे खुदरा-खुदरी नव आगन्तुक सभ जखन मंचपर अबै छैथ तँ आँखियेक इशारासँ प्रणाम-पाती, कुशल-छेम सभ कइये लइ छैथ, संगे ईहो नजैरपर एबे करैन जे कियो-कियो अपन दुनू हाथ उठा इशारामे किछु कहिते छेलखिन।

बदलूओ भाय अपन संगी-साथीक बीच गप-सप्प करिते छला, की गप करै छला से तँ ओ जानैथ, मुदा मुँहक रूखिसँ जरूर बुझि पड़ै छल जे खिचड़ी भोज जकाँ अपन खिचड़ी कार्यक्रमक योजना भरिसक बना रहला अछि तँए करखनो-करखनो जखन-जखन फोरनबला मिरचाइक

झाँस लगै छेलैन तँ मुँह बिदैक जाइ छेलैन आ जखन-जखन घीक टाँस लगै छेलैन तखन-तखन मुँह कलैश जाइ जाइन। राधेश्याम काकाकेँ नइ रहल गेलैन। आँखि उठा बदलू भायपर ई सोचि अँटकौलैन जे बदलू भाय चारू कोण झिझिरकोणा खेलाइबला शिकारी छथिये, जरूर नजैर उठा तकबे करता। जखन नजैर-मे-नजैर मिलत तखने नजरियेसँ कहबैन जे कनी अहूँ आगू घुसकु, अपन संगीकेँ छोड़ि ससरू आ कनी हमहूँ ससैर जाइ छी। जखन दुनू गोरे एक कान्हीक छी तखन जँ दूठाम रहब तँ दुनियाकेँ नीक जकाँ थोड़े देख पएब।

आँखियेक इशारासँ राधेश्याम काका बजला-

“झगड़ा ने दन, चुन तमाकुल किए बन्न।”

खग जानए खगक बोल, बदलू भाय आँखियेक इशारासँ जवाब देलकैन-

“फिफ्फी-फिफ्फी।”

माने ई जे अहूँ कनी एक भाग भऽ जाउ आ हमहूँ भऽ जाइ छी। एकठाम होइते तमाकुलो खाएब आ मंचक–दुनियाँक–खेलो देखब।

राधेश्याम काका सेहो बीचसँ घुसकैत-घुसकैत एक भाग भेला आ बदलू भाय सेहो बढ़ला। एकठाम होइते दुनू गोरे हाथ मिलबए लगला। हाथ मिलबैसँ पहिने बदलू भाय बजला-

“चूने तमाकुलपर तँ ऐ दुनियाँक खेल चलैए, तखन जँ दुनू गोरे चुपे रहब से नीक भेल।”

ओना, बदलू भायकेँ राधेश्याम काका भीतरसँ जनिते छैथ जे बदलू भाय अलंकारिक लोक छैथ तँए झटहा फेकैक लूरि हमरासँ बेसी छैन्हे, मुदा किछु छैथ तँ छैथ, छिया तँ संगीए। जँ संगीक विचारे नइ बुझब तखन संगपना केतेकाल चलत।

ओना, बदलू भायमे ईहो गुण छैन जे कोनो बात बजला पछाइत

सुननिहारक मुँह बिदकैत देख बुझि जाइ छैथ जे भरिसक हमर विचारक रस नीक जकाँ नहि पीब सकला। मुदा केते पीलैन आकि नइ पीलैन, अइले तँ तीन लाखक जपानी थर्मामीटरक जरूरत अछि...।

राधेश्याम कक्काक मुँह तेहने सन बिदकैत देख बदलू भाय बजला-

“तम सँ तमाकुल भेल आ चन सँ चुन भेल।”

बदलू भाइक मनक बात जेना राधेश्याम काका बुझि गेला तहिना बजला-

“अहूँक बुझौवैल बुझनिहारेटा बुझि सकै छैथ। हमरा सन लोक-ले ते गीत आ छन्द फुटा कऽ कहब तखने बुझि सकै छी।”

राधेश्याम कक्काक विचारकेँ, जहिना हर्ड़ी-मकरक मेलामे धिया-पुताक हाथसँ इनहोरमे सानल अरबा चाउरक रोटी आ अल्लू-कोबीक तरकारी लऽ कऽ चिल्होरि उड़ि जाइए आ धिया-पुता अपन अहार छिनाइत बेवहारपर नजैर नहि दऽ खेलौना जकाँ चिल्होरिकेँ देखबो आ हँसबो करैत रहैए तहिना बदलू भाय राधेश्याम कक्काक मुँहक बोल लुझैत बजला-

“गीत तँ संगीत छी जे लयक संग चलैए। लय असीमित अछि। मुदा छन्द मात्राबद्ध होइए जे ध्वनि-अंकनकेँ पकैड़ अपन सिरजन करैए।”

ओना, बदलू भायकेँ जेना जीहेपर रहैन तहिना तरतरा कऽ तेना बजला जे राधेश्याम काका थकमकाए लगला...।

थकमकाइक कारण भेलैन काका अपने छैथ तँ गद्यकार मुदा साहित्यिक कार्यक्रम दुआरे गोटि-पँगरा लयात्मक कविता सेहो लिखि लइ छैथ मुदा ने छन्द रटने छैथ आ ने मात्राक ठेकान ठीकसँ बुझि पबै छथिन...।

राधेश्याम काकाकेँ ठकुआइत मन देख बदलू भाय बुझि गेला जे जहिना सोझमतिया रस्ता चलनिहार राधेश्याम छैथ तहिना सोझमतिया सेहो छथिये। तँए गप-सप्पकेँ आगू नहि ठेल बदलू भाय पाशा पलैट बजला-

"जखन एकठाम बैसल छी तखन पहिने तमाकुल खाउ। बुझिते तँ छी जे जे रामा-कठोला हएत से हेबे करत। तइले अपनाकेँ अनोन-विसनोन बनौने रहब सेहो नीक नहि।"

ओना, बजैक क्रममे बदलू भाय बाजि गेला मुदा लगले चारू भाग नजैर खिड़बए लगला जे तमाकुल खाएब किनको अधला तँ ने लगलैन। नजैर खिड़ैबते बुझि पड़लैन जे केते गोरेकेँ इच्छा भऽ रहल छैन। मुदा जखन अपन तमाकुलक डिब्बीपर नजैर गेलैन तखन मन पड़लैन जे तमाकुल तँ डिब्बीमे ऐछे नहि, अछि तँ मात्र चुनेटा! पाछू मनकेँ उनैटते भक खुजलैन जे जखन दुनू संगीक बीच 'फिफ्फी-फिफ्फी'क सम्बन्ध अछि तखन परबाहे की। ओना, राधेश्याम कक्काक मन बदलू भाइक जिनगीपर छछैल रहल छेलैन, तँए तमाकुलपर सँ नजैर हटि गेल छेलैन। तैबीच अपन हिस्सा बढ़बैत बदलू भाय बजला-

"तमाकुल अहाँक भेल, चुन आ चुनौनाइ हमर भेल, हौउ आब देरी नइ करू।"

बदलू भाइक मुहसँ तमाकुल निकैलते राधेश्याम काका जेबीसँ तमाकुलक डिब्बी निकालि बदलू भाय दिस बढ़बैत बजला-

"निम्मन तमाकुल अछि। शुद्ध सरैसा, तँए नीक जकाँ चुन पिआएब।"

राधेश्याम कक्काक मुहसँ तमाकुलक बड़ाइ सुनि बदलू भायकेँ जेना मनमे कचोट भेलैन। कचोट ई भेलैन जे भरि दिन तँ सकरी कट तमाकुल खाइबला छी। तखन...। मुदा विचारकेँ मोड़ैत बजला-

"रस्तेमे तमाकुल सठि गेल, केतौ कीनैक गड़े ने लगल। आब सोचै छी जे जखन पान चलत तखन ओही डालीमे सँ एक पुड़िया तमाकुल लऽ लेब।"

जेना-जेना बदलू भाय एक हाथक तरहत्थीपर दोसर हाथक औंठा रगड़ैत रहैथ तेना-तेना मनमे रंग-रंगक विचार सेहो उठए लगलैन। टीपगर तमाकुल रहने मुँहमे दइते दुनू गोरेक मनकेँ रसबए लगलैन। तही बीच पानिक संग चाहक कप मंचपर पहुँच गेल। चाहक कप देख बदलू भाय मने-मन अपन मेड़िया दिस बढ़ैक विचार केलैन। जे राधेश्याम काका बुझि गेला। बुझिते बजला-

"अखन चाहे आएल अछि, पान पछुआएले अछि तखन एना कछ-मछ किए करै छी।"

अपन आँट-पेट बुझैत बदलू भाय गुमे रहला। मुदा मनमे ई कछमछी रहबे करैन जे सीमालंघन भऽ जाएत।

घोषित समैयक हिसाबसँ पनरह मिनट बिलम भऽ रहल अछि, मुदा अखन तक ओतबे लोक पहुँचल छैथ जेते सुनौनिहार छथिन। माने कवि छैथ। सुननिहार गौंआँ-समाज अखन एके-दुइये आबिये रहला अछि। ओना, मैकपर बेर-बेर घोषणा होइत छल जे आब कार्यक्रम शुरू भऽ रहल अछि, तँए समाजसँ आग्रह भऽ रहल अछि जे यथाशीघ्र सभा स्थलमे पहुँच अपन आसन ग्रहण कए ली। मुदा बहिरा करेतक बीख जकाँ मंत्रक कोनो सुनवाइ होइते ने छल। ओना, किछु गौंआँक मनमे एहेन विचार रहबे करैन जे बाहरक विद्वतजन आएल छैथ तँए संग पूरब अनिवार्ये नहि उचितो छी। मुदा से कम लोक छला जिनकर एहेन विचार छेलैन। बेसी ओहन छैथ जिनकर सोचब छैन- जाकी रहे भावना जैसी, प्रभु मुरत देखी तिन तैसी..; ओहन लोक अपन-अपन जिनगीक लय अपना-अपना ढंगसँ पुरबैक पाछू बेहाल छैथ। जइसँ कवि आ कवितासँ

मेले ने खाइ छेलैन।

आधा घन्टा बिलम होइत-होइत छोट सभा-जोकर दर्शक-श्रोता पहुँच गेला। कार्यक्रम शुरू भेल। मंच सजए लगल। मानल-जानल साहित्यकार लोकनिक मंच सजए लगल। ओना, बदलू भाय अपन निर्धारित स्थानपर पहुँच गेल छला मुदा राधेश्याम काका पछुआएल रहैथ। संजोग भेल राधेश्याम काका सेहो पहिलुका जगह बदैल मंचपर पहुँचला। ओना, अपनो मन रहैन जे एहेन खिचड़ी मंचसँ अचारे-चटनी बनि अपन मर्यादा बना राखब नीक। सएह भेबो केलैन। पहिल कतारक अन्तिम छोरपर राधेश्याम काका बैसौल गेला। बैसते मनमे खुशी झलैक उठलैन जे भने नीक भेल। तमाकुलक थुको फेकैमे असान हएत आ बैसारक एकटा छोरपर बैसने आन साँप जकाँ तँ नहि मुदा गनगुआरिक दोसर मुँहथैर जकाँ तँ भेबे कएल। भाय, सभ अपन विचारक मालिक छी, एकठाम बैस विचार करू..!

अपना जगहपर बैसल बदलू भाय राधेश्याम काकापर आँखि गड़ौने रहैथ। जखन अपना दिस तकैथ तँ बुझि पड़ैन जे समुचित जगहपर छी, मुदा राधेश्याम काका-ले अनुचित जरूर भेल छैन। हम तँ नोकरिया लोक छी, ड्यूटीमे छी, अपन गुण चाहे जे हुअए मुदा अखन तँ हमरा एकटा उत्तराधिकारीक रूप निमाहैक अछि...।

चारू कोण घुमैबला बदलू भाइक नजैर, तँए समझौता करैत मानि गेलैन जे जखन खिचड़ीए कार्यक्रम छी तखन आड़ि-धूरक ठेकाने कोन..! जेना गामक पहिल साहित्यिक आयोजन भेल तेना जमल बढ़ियाँ। बढ़ियाँ जमैक आन कारण जे भेल हुअए मुदा एकटा प्रमुख कारण ईहो भेल जे काश्मीरसँ कन्याकुमारी आ मेची धारक कातक नक्सलसँ लऽ कऽ अगरतल्ला धरिमे रहनिहार–माने ओइठाम नोकरी रूपमे काज केनिहारक–समाज गाम बनियेँ गेल अछि। सभकेँ किछु नवका विचार रखैक इच्छा होइते छै तँए एक कविक काव्यक पछाइत पचासो रंगक

शायरी आ दोहा, पचासो भाषाक मंचपर श्रोता-वक्ता दिससँ झड़ए लगल। अढ़ाइ घन्टा केना गुजैर गेल से ने कवि-साहित्यकार बुझलैन आ ने श्रोता। अन्तिम पाठ दीनानाथ बाबाक भेलैन। थुल-थुल बुढ़ दीनानाथ बाबा, तँए चारि गोरे मिलि कऽ हुनका अराम कुर्सीपर बैसौलकैन। भोरुका नढ़िया जकाँ सबहक नीन टुटले छल, विचार ग्रहण करैले सभ एकाग्र छेलाहे, तँए सभा एकदम शान्त भेल।

शान्त सभा देख दीनानाथ बाबा अपन पहिल आशीर्वचन जकाँ बजला-

“ई कविता पचास बर्ख पूर्व रचने छेलौं।”

‘पचास बर्ख पूर्व’ सुनि सभामे गुदगुदी शुरू भेल। मंचपर बैसल दीनानाथ बाबा अकानए लगला जे केहेन प्रतिक्रिया भऽ रहल अछि। मुदा समाजोक तँ थाह नहियेँ अछि जे पचास बर्ख पूर्व सुनि कोन हँसी हँसि रहल अछि। पचास बर्ख पूर्वक समाजक ऐना आजुक समाजक लेल केते उपयुक्त अछि। गुदगुदीक संग भनभनी शुरू भेल-

“पचास बर्खक बीच किछु रचबे ने केलैन जे हाल बदलैत समाजक हाल-चाल सुनैबतैथ!”

“पचास बर्ख पूर्व कविता करै छला आ पछाइत छोड़ि देलैन..!”

हर्ष-विस्मयसँ सभा भनभनाइते छल कि तही बीच मंच संचालक आदेश छोड़लैन-

“आब अहाँ सब अपन-अपन भनभनी बन्न कऽ सुनै जाउ... ।”

फेर मंच संचालक महोदय आदेश प्रसारित केलैन-

“वन्धुगण! एकाग्र भऽ बाबाक आशीर्वचन सुनू।”

ओना, बाबाक कविता पाठक नाओं सुनि किछु गोरे साकांछ जरूर भेला, मुदा किछु गोरेक बीच गुदगुदी चलिये रहल छल। गुदगुदीक कारण

छल पचास बर्ख पूर्वक कविता। पचास बर्ख पूर्वक कविताक बीच पचास बर्खक समैयक अन्तराल भऽ गेल। दोसर ईहो जे जे बेकती एकबेर-दूबेर सुनने हेता हुनका की भेटतैन। ओना, कोनो कविताक रसास्वादन एको बेरे सुनने होइए आ दसो बेर सुनने नइ होइए। भाय, एकर कारण स्पष्ट अछि। स्पष्ट ई अछि जे कियो जँ रामायणकेँ अपन आचरणक अनुकूल बना पढ़ै छैथ तँ हुनका आगूक पाठक खगता होइ छैन, पैछला तँ जिनगीक पैछला पन्ना भेल जे इतिहास वा भूत भेल। जरूरत तँ वर्तमान आ भविसक अछि। मुदा जे सोझे–माने बिनु आचरण निरमौने–पाठ करै छैथ हुनका दस बेर कि जे दस जुगो पाठ केने रस नइ भेटतैन।

एक भागमे बैसल राधेश्याम काका आ दोसर भागमे बैसल बदलू भाय सभा दिस नजैर दौगा-दौगा देख-देख ऐ निर्णयपर आबि अँटैक जाथि जे जखन खिचड़ीए कार्यक्रम भेल तखन तँ सभ किछु ने खिचड़ीए हएत।

खाएर.., खीर भलेँ नइ हुअए, किए तँ ओ एकचलिया माने एक गुण-सोभावक वस्तुक समावेशी छी, मुदा खिचड़ी तँ से छी नहि। ओ तँ नोनगरो होइए आ मीठगरो होइते अछि। भलेँ जाति-सोभाव भेने नोन अपन नाओं छिपा खिचड़ीए कहबए आ मीठ अपन नाओं खोलैत गुड़ खिचड़ी किए ने कहबए। ओना, घीक प्रवेश नोन खिचड़ीए-मे पचैए, गुड़ खिचड़ीमे नहि, मुदा ओहो अपन नाओं अरैज घी-खिचड़ी तँ कहबैए।

आँखिकेँ डेढ़िया करैत बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ इशारामे पुछलकैन-

“नीक लगैए की नहि?”

जहिना आँखिक इशारामे बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ पुछलकैन तहिना राधेश्यामो काका इशारेमे जवाब देलखिन-

“जेहने अहाँ तेहने ने हमहूँ।”

ओना, दुनू गोरे दीनानाथ बाबाक कविता सुनि मने-मन अपने-आपमे रमए लगला। ओना, दुनूक रमैक अपन-अपन कारण छेलैन। रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित कविता छेलैहे तँए बदलू भाय मने-मन खौंझाइत रहैथ जे भूतक संग हमहूँ भुतिआ रहल छी। मुदा राधेश्याम कक्काक रमकीक कारण रहैन जे जखन नव समाजमे प्रवेश पेलौं तखन ओइ समाजकेँ केना साहित्य समाजमे प्रवेश कराएब, तेहने ने कवितोक पाठ होइ।

ठहक्काक बीच मंच विसर्जन भेल। मंच विसर्जन होइते राधेश्यामो काका सहैट कऽ बदलू भाय दिस बढ़ला आ बदलूओ भाय राधेश्याम काका दिस सहटैत आगू बढ़ला। आगू बढ़िते बदलू भाय बजला-

"भाय साहैब, जीता जिनगी अहिना होइ छइ।"

ओना, बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ अध्ययन करैत बाजल छला। अध्ययन ई जे शीर्ष पाठ जेहेन हेबा चाही से नइ भेल। मुदा एतेक खुशी तँ मनमे उठले छेलैन जे नव समाजक लेल नव कार्य भेल तँए नम्य भेबे कएल। राधेश्याम काका बजला-

"जाए दियौ जेते जे भेल से भेल, तमाकुल खाउ आ अहूँ विदा होउ।"

जेबीसँ तमाकुलक पुड़िया निकालि बदलू भाय बजला-

"संचालन समिति धरि नीक बनल छल। लिअ, जीवनी खेनिहारक कीनल पुड़िया छी।"

मुस्की दैत राधेश्याम काका बजला-

"एक बेर अहाँक चुन छल आ हमर तमाकुल, मुदा ऐ बेर हमर चुन रहत किए तँ अहाँक तमाकुल चोरुक्का छी।"

बजन्ता लोक बदलू भाय, बजला-

“जेते तमाकुलक पुड़िया छल तइ हिसाबे खेनिहार कम छेला, तँए घरवारीक समान फेका जैतैन ने, तइसँ नीक ने जे ओकर उपयोग भऽ गेल।”

चुनौटी निकालि बदलू भाइक हाथमे दैत राधेश्याम काका बजला-

“नीक लागल किने?”

‘नीक लागब’ सुनिते बदलू भायकेँ जेना बिढ़नी काटि नेने होनि तहिना छटपटाइत बजला-

“पहिलुक कविताक पाठ जे भेल तखने मन ओकिया गेल, से केतबो आसन मारी मुदा ओकियाएब कमे ने भेल। अन्त तक बनले रहल।”

पहिल पाठ नवतुरिया कवि ताराकान्तक भेल छल। ताराकान्त बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे जीवकोपार्जन करै छैथ। मुदा कविता गामक उजरल-उपटल जीवकोपार्जन केनिहारक जिनगीसँ सम्बन्धित छल। शब्द विन्यास नीक रहैन। राधेश्याम काका ताराकान्तक जिनगीकेँ ओइ ढंगसँ नहि देखने, तँए भावक विचारमे भावावेश भऽ गेल छला। खास कऽ गामक उजरल-उपटल जिनगीक चर्च सुनि। ओना, ई बात जरूर राधेश्याम कक्काक मनमे ठहकै छेलैन जे अपरिचित कविक रचना जकाँ कविता अछि, मुदा नवतुरिया रचनाकार रहने मनमे आशा रहबे करैन जे आगू नीक कविता करता। बजला-

“किए शुरूहेमे जी ओकिया गेल?”

‘किए’ सुनि बदलू भाय चारूकात नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे अखन नीक जकाँ कार्यक्रम विर्सजन नइ भेल अछि, चारूकात सभ छिड़िआएले छैथ। बजला-

“भाय साहैब, हम ते बन्हौटा जिनगीक जालमे पड़ल छी, तखन मुँह केना खुजल रहत! आइ एतबे रहए दियौ।”

ठोरमे तमाकुल लैत राधेश्याम काका बजला-

“भेँट-घाँट होइत रहत।”

बदलू भाय बजला-

“मन रहितो मनमरु बनल छी। जँ जीबैत रहब ते भेँट हेबे करब।”

❑ **साभार : त्रिकालदर्शी**

एते दिन अपना-ले आब अनका-ले

सात सालक पछाइत परदेशसँ गाम एलौं। सेहो ओहिना नइ एलौं, अमेरिकामे एकटा संगी रहै छैथ, वएह अपन बेटाक उपनैन करता, ओही निमंत्रणमे एलौं। ओना, बेटाक जन्म अमेरिकेमे भेलैन, जइसँ ओ ओतुका जन्मगत नागरिक भऽ गेल, मुदा बाप-दादाक देल सुकृत्यो आ विचारो सोल्होअना मरि गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए, ओहो तँ जीवित अछिए। ओना, मनमे एहेन बात उठि गेल रहए जे जैठाम बच्चाक जन्म हुअए, नागरिक जीवनक अधिकार भेट जाए तैठामक जँ संस्कार-संस्कृति भेटत तँ ओ अनुकूलता पेब अधिक पुष्पित-फलित हएत। मुदा अनेरे मनकेँ खींच-तानसँ परहेज केलौं आ बीस बर्खक विद्यालयक संगीक बेटाक उपनैनमे गाम आबि गेलौं... ।

ओना, गाम अबैक दोसरो कारण भेल जे मनमे उठि गेल– जखन गाममे कोनो लज्जतिये ने अछि तखन लाज केतए जनमत आ लज्जैत केतए औत। तँए परदेशसँ दूरदेशपर नजैर ई चलि गेल जे जखन लज्जैत विहीन गाम छोड़ि देलौं, तखैन जेतए लज्जैतगर देखबै तेतए ने रहब। तँए जँ संगीक जोगारसँ अमेरिकेमे गोड़ा बैस जाए तँ किए ने अमेरिके चलि जाएब। ओना, संगी ओइठामक शिक्षा-विभागमे पैघ अधिकारीक पदपर छैथ।

...हँ तँ कहै छेलौं जे गाममे लज्जतिये ने अछि तरवन लाज केतए जनमत आ लाजबन्त बनि लजबन्ती बनब तँ ओहने ने हएत जे 'सुती खढ़पर आ सपना देखी नअ लाखक।' जहिना गामक अधिकांश मनुखो, मालो-जाल आ गाछो-बिरीछक जिनगी गामक माटिपर ठाढ़ अछि, तहिना कि ओकर रक्छो भऽ रहल अछि जे ओ ओहन तगतगर भऽ जाए जइसँ लहलहाइत रंग ओकरा ऊपर सदिकाल नचैत रहइ, से कहाँ अछि..? मरि गेल माटि आ मरि गेल अछि माटिक उपज! खेतीए-पथारी आकि किसाने-बोनिहारक की लज्जैत अछि ओ केकरा आँखिसँ हटल अछि। आ खेतीए-पथारी किए, आनो-आन साधनक ओहन गति की नइ अछि। जे भूमि समुद्र-पहाड़ सभसँ सुरक्षित अछि ओ भूमि मरनासन्न भऽ जाए, तँ की ओ मरणदाता नइ बनत..? खएर जे से...।

परसू उपनैनो समाप्त भेल आ संगियोँ चलि गेला, खाली घरक पछुआरमे मेघडम्बर टाँगल रहि गेल छैन। भरि दिन काल्हि सुतबे केलौं। घर-दुआर तँ ढनमनाइये गेल छल। ढनमनेबो केना ने करैत, एक तँ खढ़-भीतक घर, जे बाढ़ियो देखलक आ झाँट-पानि सेहो खेलक मुदा एते तँ दूर दृष्ट भइये गेल अछि ने जे पोलीथिनेक घर, पोलीथिनेक ओछाइन-बिछाइन...। खाली झोरामे रखि लिअ आ पिकनीक मनबए गाम चलि आउ। मोबाइलमे दुनियाँक सभ फिल्मो आ गीतो ऐछे जे देखैत-सुनैत सप्ताह भरि गाममे रहि जाउ, फेर बोरिया-विस्तर समेट झोरामे लऽ चलि आउ...।

तेसर दिन अपन खेत-पथारपर नजैर गेल। छह बीघा खेत छल, पुर्वजक अर्जल, हमरासँ पूब धरिक पीढ़ीक वएह जीविकाक आधार रहल। कोसी नहैर गाम होइत बनल। तीन बीघा जोतसीम जमीन नहरक पेटमे पड़ि गेने चलि गेल। एक बीघा गाछी-कलम ऐछे, दू बीघा जे जोतसीम बँचल ओ मनकेँ मिसियो भरि नइ टुटए देलक। मनमे यहए नचैत रहल जे कोसी नहैरसँ सालो भरि खेतकेँ पानि भेटतै, सालो भरि

खेतमे जजात लहलहाइत रहत तँ दू बीघा छह बीघाक मुकाबला करत। तैसंग ईहो जे सालो भरिक कारोबार रहने, परिवारमे कहियो बेरोजगारी आकि भुखमरी नइ औत। मुदा भेल ई जे नहरमे पानि नइ आएल, नहर चालूए ने भेल। हमरा सन-सन केतेको किसानक मूल पूँजी हाथसँ कटि गेल..!

ओना, हमर गाम नमहर अछि, खेतक रकबो बेसी अछि। सभ जातिक गाम छी। ओना, बुढ़-पुरान जे छैथ हुनको सबहक एकमत नइ छैन, कियो 'बरह-वरना' गाम कहै छथिन तँ कियो 'छतीस-वरना', मुदा गाममे तइसँ बेसी जातिक बास ऐछे...। उत्तरबरिया आ दछिनबरिया बाध मध्यम ऊँचाइ जमीनक अछि, तँए नीक उपजाउ अछि आ पछबरिया बाध नीचरस अछि, जइमे बेसी बरखा भेने आकि बाढ़ि एने केचली-केशौर उपजैए। गामक पुवरिया भाग ऊँच अछि, जइसँ सौंसे बाध गाछीए-कलम आ बाँस अछि। सबेरे करीब आठ बजे भिनसरमे जलखै खा बाधक खेत देखैक विचारसँ विदा भेलौं। दछिनबरिया आ पछबरिया बाधमे अपन खेत नइ रहने ओमहर नजरिये ने गेल। बँचल पुबरिया बाधक गाछी-कलम आ उत्तरबरिया बाधक जोतसीम जमीन। जोतसीम जमीन बँटेदारक हाथ चलि गेल अछि आ गाछी-कलम बगवारक हाथ। तँए मनमे उठि गेल जे चीज भलेँ अपने किए ने छी, मुदा करै-धड़ैले तँ चलि गेल अछि दोसरेक हाथ, तँए हुनका संग करब बेसी नीक हएत। संगमे रहता तखन ने नीक देख नीक कहबैन आ अधला देख अधला कहबैन...।

गाछीक बगवार दियादीए परिवारक छैथ। वगवारिक हिस्सेदारीक रूपमे ने देने छिऐन आ ने ओहो बुझै छैथ। ओना, जेठ भैयारी पितियौत रहितो गरीब छैथ, मुदा ओहो गाछीक उपजाक हिस्सा हिस्सेदारक रूपमे नहियेँ दइ छैथ, मुदा समांग जकाँ गाछीक रक्छा तँ करिते छैथ...।

विदा होइते, भातीजक नाओं लैत बजलौं–

"राधेश्याम छह हौ?"

राधेश्याम आँगनमे नइ रहए, सुखी भाय दरबज्जेपर सँ बजला–

"गौरी, एम्हरे आबह। राधेश्याम झंझारपुर गेल अछि। अपने अखन तेहेन काज करै छी जे हाथ-पएर दुनू बन्हाएल अछि।"

अखन धरि दुनू गोरेक गप-सप्प परोछे-परोछी होइ छल मुदा हाथ-पएर काजमे बान्हल छैन, तँए उठिये ने हेतैन, एहेन कोन काज छी से मनमे देखैक उत्कण्ठा जगल। जहिना शिवराति ऐबते सिंहेश्वर बाबाक दर्शनक डोरी मनमे लगैए तहिना गप-सप्पक डोरि पकड़ने आगू बढ़ैत बजलौं–

"भैया, गामक की हाल-चाल अछि?"

'हाल-चाल' सुनिते हाथमे खड़ौआ जौड़क खोंचा नेने पएरक औंठा गतानल–माने जौड़क पैछला भाग औंठामे तीन भत्ता बान्हल–दुनू हाथ उठा जे कपार ठोकए लगला जइसँ साबेक जड़ि आँखियेमे गड़ि गेलैन। मुदा दुनू हाथक खोंचा निच्चाँमे रखि दुनू हाथे आँखि मिड़ैत सुखी भाय बजला–

"जान बँचल। जाने की बँचत बौआ, सर्वनाश भऽ गेल!"

'सर्वनाश' सुनि मन आरो विचलित भऽ गेल। की सर्वनाश भऽ गेलैन? ताबे सोझहा-सोझही भऽ गेलौं। सुखी भैयाक उतरल चेहराक रंग-रूप देख बुझि पड़ल जेना केते मोन दुखक भार दबने छैन, केते नइ..!

हमरा देखिते बजला–

"गौरी, गामक गाछी-कलम उपैट गेल। तोरो जानकारी नइ देलियह। अनेरे किए गामक दुखसँ तोरो मनकेँ दुखैबतिअ।"

कहि सुखी भाय चुप भऽ गेला। एक संग अनेको प्रश्न उठि कऽ मनमे ठाढ़ भऽ गेल। एहेन बात सुखी भाय किए बजला जे अपन गामक

दुखसँ तोरो दुखैबतिअ। की हमर गाम नइ छी, जँ छी तँ दुखमे केते भागीदारी अछि, सेहो तँ मनमे ठहैकते अछि...।

मनक सभ बेथाकेँ एक्केबेर विचारक कलमसँ खरड़ैत कहलयैन–

“भैया, अनेरे कोन माया-जालक भभटपनमे पड़ल छी, दुनियाँमे केतौ किछु छै, जहिना सभ आएल तहिना कियो नाङैर नेने तँ कियो सुड़ाइत नाङैर नेने जेबे करत। तइले अनेरे किए चिन्ता करै छी।”

हमर बात सुखी भैयाकेँ नीक लगलैन, बजला–

“बेस कहलह। मुदा जखन तूँ गामसँ अपन गाछी-कलम सुमझा गेल छेलह, तखन पहिने वएह ने कहबह। मुदा तेहेन मनुखो आ मनुखगमो सभ भऽ गेल अछि जे पुस-पुसतानिक कनारि चुकबैपर लागल अछि।”

सुखी भाय की बाजए चाहै छला से बुझिये ने पेब रहल छैलौं। पुछलयैन–

“से की, भैया?”

बजला–

“अपना गामक सभ गाछी-कलम पुबरिया बाधमे अछि। तइसँ सटले पुबरिया गामक पछबरिया सीमा छइ। सीमाक जे बान्ह अछि ओ सड़कनुमा चाकर अछि। पुबरिया गामबला अपन सीमाकेँ ऊँचगर सड़क बना देलक। गामक बहावक पानियेँ रूकि गेल। चारू-भागसँ घेराएल बाध बाढ़िक पानिसँ घेरा गेल। चौरीए जकाँ चारि मास पानि लागल रहल, अदहासँ बेसी गाछी-कलम सुखि गेल।”

मुहसँ खसि पड़ल–

“अपनक की दशा अछि।”

जहिना जुआन बेटा, धेनुगर गाए, पकाएल चास आकि फलाएल

गाछ नाश भेने लोककेँ जेते दुख होइ छै, तइसँ बेसी दुख सुखी भाइक चेहरापर झलकैत रहैन। रोगाएल-पीड़ाएल सुखी भाइक छातीक हार जहिना झक-झक करैत रहैन तहिना मनक पीड़ाक हार सेहो झकझकाइत रहैन। बजला–

"बौआ, अपन सोलहन्नी सुइख गेल। ओहिना मुइल मुरदा जकाँ गाछीमे गाछ ठाढ़ छह!"

सुखी भाइक समाचार सुनि मन कलैप गेल। मुदा उपए..?

कहलयैन–

"भैया, जखन गाम आएल छी, तखन कनी गामक खेत-पथार सेहो देख लेब।"

सुखी भाय चुपे रहला, मनमे भेल जे आब हुनका कहबे की करबैन। बिना किछु बजने-भुकने उत्तरबरिया बाध दिस विदा भेलौं। कनियेँ जखन आगू बढ़लौं कि पाछूसँ सुखी भैया बजला–

"गौरी, घुमैकाल जँ मन हुअ तँ गाछियो देखने अबिहह।"

सुखी भैयाक इमानदारी मनमे ठहकल। ठहकल ई जे भैया अपन सभ जानकारी गाछीक दैत कहलैन जे देखैक मन हुअ तँ ओहो देखने अबिहह। यहए ने भेल उच्च कोटिक इमानदारी जे अपन पसरल काजकेँ अपना नजरिये सुमझा देलैन। केकरो अनका घरक जुति-भाँति फुरबैमे जेते मन लगै छै तेते जँ ओकरा पुड़बैमे लगैत तँ दुनियाँक रंग-रूप बदलैत बढ़ैत...।

सुखी भैयाक विचारसँ जेना अपन विचार बदैल गेल। बदैल ई गेल जे जइ गाममे खेतीक संग खेतीक अभिकरणो मरनासन्न भऽ गेल अछि, जिनगी जीबैक कोनो लज्जैत नइ अछि, तैठाम जँ सुखी भैया सन लोक अपन माटि-पानि, कुटुम-परिवार, सर-समाजक बीच साधक बनि अपन-अपन मातृभूमिक संग पितृभूमिक साधनामे लगल छैथ, तेतए तँ वएह

असमसानी ने शिव कहौता..!

मनमे ऐबते जेना सुखी भाय नाचि उठला। चलैत-चलैत कहलयैन–

“भैया, आइ भरि गाममे छी, काल्हि भोरे चलि जाएब। तखन तँ अहीं सबहक ने सभ किछ रहत। जे गाममे रहत सएह ने गामवासी भेला, हम सब तँ ओहन भेलौं जे गामवाली गाम लेती दाइ जेती छुछे।”

ओना, अपना मने सुखी भायकेँ सुख-सुखबैक रहैन मुदा से भेल नइ। हुनका हमर बात नीक नइ लगलैन। बजला–

“गौरी..!”

‘गौरी’ कहि सुखी भाय चुप भऽ गेला। कहलैन किछु ने। मनमे रंग-रंगक बात ठहकल। मुदा सभ बातकेँ तहियबए लगलौं। ‘गौरी’ कहि चुप भऽ गेला, जे बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल..!

मनमे उठल– किए गौरी कहि चुप भऽ गेला? कहीं एहेन तँ ने मनमे उठल छैन जे कोनो गाम तखने उठत जखन खुट्टा रूपमे गौंआँ ठाढ़ हएत। तैठाम जँ गामे छोड़ि गौंआँ चलि जाएत तखन ओइ गामक गति की हएत..?

मुदा भरमे-सरम अपन मनो आ मनक विचारोकेँ समेट कहलयैन–

“भाय सहाएब, साँझू पहर निचेनसँ दुनू भाँइ गप-सप्प करब। अखैन कनी बाध घुमने अबै छी।”

कहि आगू बढ़ि गेलौं। उत्तरबरिया बाध गामक सभसँ पैघ बाध अछि। तेकर कारण ईहो अछि जे दोसर-तेसर गामो हटल छइ। बाधमे प्रवेश करिते मनमे भेल जे बाधक तँ रखबार होइए। जे बाधक देख-भाल करैए। तँए अनका सीमामे ने आब आबि गेल छी। नीक हएत जे पहिने बाधक रखबार लग जाइ। मुदा नमहर बाध रहने आठ-नअटा रखबार अछि। आठो-नबो अपन-अपन हिस्सामे रहैले खोपड़ी बनौने अछि।

सभकेँ अपन अपन क्षेत्रक हिसाबे खेत बाँटल छै, जेकरा ओगरबो करैए आ ओगरवाहिक रखवारि सेहो लइए। मुदा अपन रखबार आ अपन खेत चिन्हैमे कोनो भांगठ नहियेँ भेल। किएक तँ जाबे गाममे रही ताबे खेतीए करैत रही, तँए चिनहरबे खेत आ चिनहरबे रखबार...।

अपन खेतसँ कनियेँ हटि रखबारक खोपड़ी, कट्ठा डेढ़ेक एकटा ऊँचगर परतीपर अछि। चारि-पाँचटा अशोभक गाछ ओइ परतीमे रखबार लगौने अछि। जे सौंसे परतीकेँ छहरौने रहैए। निरधन रखबार ओही गाछक निच्चाँमे बैस बाँसक कैमचीकेँ टौहकी बनबैत रहए। आगूमे सौंस बाँस, बाँसक टुकड़ियो आ चीरलो-फाड़ल रहबे करइ। आ लगमे एकटा धरगर पगहरिया सेहो रहइ। देखते निरधन बाजल–

“भाय सहाएब, अहाँ सभ ते गाम बिसरिये गेलिऐ। पौरुका साल हमहूँ कण्ठी बान्हि वैष्णव भऽ गेलौं।”

माथमे चानन कएल सेहो देखलिऐ। ओना, निरधनक घर अपना घरसँ कनियेँ हटल, मुदा टोल एके छी तँए बच्चेसँ चिन्हबे करै छिऐ। आइसँ तीस बर्ख पहिने जखन गामक नव-युवक अपन गामक उत्थान-ले एकत्रित भेला तखन निरधनकेँ हमहीं कहने रहिऐ–

“निरधन, गामक गरीब जाबे जागत नइ ताबे ओकर गरीबी नइ हटतै, तोरा सन-सन लोककेँ एकजुट भऽ जेबा चाही।”

मानि गेल निरधन हमर बात। राजी-खुशीसँ कहने रहए–

“भैया, हमरा तँ कोनो अबगैत नइ अछि, तखन तोहीं जेना-जेना सिखेबह तेना-तेना करैत सीखब।”

निरधनक बात सुनि मन भरि गेल रहए। भरि ई गेल जे जहिना भक्त अपन समरपित भावसँ भगवानमे लीन होइते ने भगवानो नोकर जकाँ सोर पाड़िते खेनाइ-पीनाइ छोड़ि दौगल आबि रक्छा करै छैथ। तहिना ने निरधन सन दीनानाथ हमरो भेटल...। कहलिऐ–

“निरधन, तूँ हमरा सबहक नेता भेलह, आब तोरा नेतागिरी करए पड़तह।”

कहलक–

“हमरा केकरो डर नै होइए। एकटा दिनकरे दिनानाथ-टाक डर होइए।”

मनमे उठल– मर्द के? जेकरामे मर्दगानी छै, आ जेकरामे मर्दागानीक बास हेतइ सएह ने जीनगानीक गीत गौत...।

कहलिऐ–

“परसू, जुलुस निकलत तइमे चलैक छह?”

निरधन कहलक–

“एवमस्त।”

जुलुस जखन झंझारपुर थाना लग गेल तखन निरधन अपन एरेस्टिंग सभसँ पहिने दइले आगू बढ़ल रहए...।

मनमे ठहैक गेल जे निरधन ठीके कहलक ने जे भैया गाम तँ बिसरिये ने गेलिऐ। मुदा निरधन सन इमानदार, कर्मनिष्ट आ सज्जन लोक लग मुहोँ छिपाएब उचित नहि। कहलिऐ–

“निरधन भाय, तोरासँ कोनो बात छिपल छह, आकि जाबे संग-संग गाममे रहलौं ताबे कहियो किछु छिपौलियह?”

धियानसँ जेना निरधन हमर बात सुनलक तहिना मुड़ी डोलबैत बिच्चेमे बाजल–

“भैया, ओहूँ कहियो निरधनमा मुहेँ कोनो अबलट बात सुनलौं हेन?”

निरधनक बात सुनि मनमे सब्रक गाछ जनमए लगल। जनैमते मन सिहकल, सिहैकते मुहसँ निकलल–

“निरधन भाय, यएह ने कोसी नहैर छी जेकरा बनबैले थानापर गेल रहह।”

जहिना जिनगीक सुकृत्तिक स्मृतिमे सभ हेरा आह्लादित होइए तहिना अपन कएल कृत्यमे निरधन विह्वल भऽ गेल। बाजल–

“भैया, तोहर तँ सोना कटोरा सन खेत चलि गेलह, तेकर बिपैत परलह तँए गामसँ गेलह, मुदा हम तँ गामक फकीर छी, हमरो बाधक तेते खेत नोकसान भेल जे सालक तीन मासक बुतातक घाटा लगि गेल।”

पोखैरक पानि जकाँ समगम होइत निरधनकेँ देख मनमे भेल जे जखन भरिये दिन गाममे छी, तखन किए ने एतै आरो समय हँसी-खुशीसँ बिताबी। पचास-पचपनक बीच उमेरक निरधन। शरीरसँ अंग विद्रूप भेने अलबटाह जकाँ चालि-ढालि। जहिना चलैमे झखाइत तहिना बोलियो सुपुट नइ निकलैत। नमहर मुँहक आकारमे नमहर-नमहर दाँत, सदिकाल मुँह बबले रहैत। मुदा ओहन इमानदारीक जीवन-यापन करैबला निरधन बाधक रखवारिक संग-संग बाँसक छिट्टा, पथिया, टौहकी, पहटा सेहो बनबैत। गामेमे बाँसो भेट जाइ आ वस्तुक विकरियो भऽ जाइ। तँए ने जिनगीमे कहियो छल-प्रपंच एलै आ ने बोलीए-चालीमे प्रवेश केलकै।

निरधनक भीतर-बाहर देख मन खुशीसँ नाचि उठल...।

बजलौं–

“निरधन, माथमे चाननो देखै छिअ?”

ओना, हमर इशारा रहए जे काजसँ टौहकी बनबैए आ माथमे उजरा चानन सेहो जमगरसँ लगौने अछि। मुदा चाननक नाओं सुनिते जेना निरधनक चानि चनैक गेलै तहिना चनचनाएल–

“भैया, पैछला साल कण्ठी लऽ गुरु मंत्र लऽ लेलौं।”

ओना, निरधनक काज आ रूप देख अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ए। माने काजे टौहकी बनबैए आ बोलीए वैष्णव अछि। मुदा तेकरा

निरधन मस्तीमे मुस्कुराइत कऽ रहल अछि, से छगुन्ता लगए। ईहो छगुन्ता लगए जे माछसँ परहेज केने अछि जे ने माछ छूब आ ने खाएब। मुदा टौहकी तँ ओकरे मारैले ने बनबैए, से किए ने काजो छोड़ैए...।

मुदा फेर हुअए जे नेतासँ निरधन बाबाजी बनल अछि, जँ मिलानोसँ पुछबै आ ओ फटहा बबाजी जकाँ कहीं उनटा फटकन लगा दिअए, तखन तँ अनेरे जेहो एकरत्ती गाममे सिनेह पेलौं सेहो धारक पानिक बेगमे अपने धुआ जाएत! तइसँ नीक जे किए ने निरधनक बात निरधनेक मुहेँ सुनी। मुदा मनमे

ईहो हुअए जे आन परदेशिया जखन गाम अबैए तखन अपन मालिक-मलिकानिक संग देश-कोसक तेते भूमिका बान्हि बजैए जेना गामक समाजो शहरी भऽ गेल हुअए..! मुदा की कैरतौं! मनक नागकेँ जमुना धारमे नाथि जमुनिया रंग चढ़बैत कहलिऐ–

"निरधन, केते दिन वैष्णव भेना भेलह?"

ओना, अपन मन कहैत रहए जे निरधन तँ दूधा वैष्णव अछि, माने जे जिनगीमे ने कहियो झूठ बाजल आ ने छल-प्रपंच केलक, सभ दिन अपन जीवन-यापन अपन श्रम-शक्तिक बले केलक, ओकरा की कहल जाए। रहल बात किछु खाइ-पीबैक परहेज करब, तइले कण्ठीक कोन प्रयोजन छइ। समाजक अस्सी-सँ-नबे प्रतिशत ओहन परिवार अछि जेकरा माछ-मौस सन वस्तु कीनैक तागत नै छै, ओ परहेजे की करत। मुदा तैयो निरधनक मन टोबैत रही जे एहेन तँ ने मनमे छै जे जहिना मछुआरा काज करैबला गाए-महींस पोसब दिस नइ तकैए तहिना ने गाए-महींस पोसनिहार सेहो मछुआरा दिस नइ तकैए। मुदा जेना अपन तीस बरख पहिलुका जिनगीक स्मृतिमे निरधन वौआइत रहए...।

बाजल–

"भाय सहाएब, जहिना अपना सभ कण्ठ फाड़ि-फाड़ि अपन बेथा-

कथा गाम-गामक लोककेँ कहैत सरकारोकेँ कहै छेलिऐ, मुदा सुननिहार केहेन बहीर रहए से मन छह आकि बिसैर गेलहक?”

निरधनक बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। जे बात भाँजेपर ने चढ़ल तइमे की बुझलौं, की नइ बुझलौं तइ झमेलसँ अपनाकेँ कात करैत पुछलिऐ–

“निरधन, मन रमै छह किने?”

‘मन रमै छह किने’ सुनि निरधन रमता जोगी जकाँ बाजल–

“भाय सहाएब, तीन साल गुरुमंत्र नेना भेल हेन, तइमे केतेको अमैयो भनडारा पुरलौं आ केतेको कतिको, एक-पर-एक दाता दुनियाँमे भरल अछि।”

मनक गदगरीसँ बुझि पड़ल जे भरिसक निरधनकेँ मनलग्गू काजसँ भेँट भऽ गेलइ। कहलिऐ–

“अपनो भनडारा करै छह कि खाली अनके कैतका खीर आ अमरस्साक मालदह पबै छहक।”

हमर बात जेना निरधनक मनमे मोहैन चला देने होइ तहिना मोहित होइत बाजल–

“भाय सहाएब, आसीन मासमे जखन बरखा तोड़ाइए, धानमे जीह पड़ै छै तहियेसँ बाधमे आबि बसै छी।”

निरधनक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक साधु सबहक संग जेना आत्म चेतना जगि गेलइ, तँए अपन बात अपने मुहेँ निरधन व्यान नै करए चाहैए। ओना, अपनो देखल अछि जे आसीन-कातिकसँ उत्तरबरिया बाधक ओगरवाहि निरधन करिते आबि रहल अछि। मुदा एना भऽ कऽ नइ बुझै छेलौं...।

पुछलिऐ–

“एना जे झाँपि-तोपि बजै छह से नइ, कनी खोलि-खोलि बाजह।”

शिवालयमे जहिना शिवदर्शन-ले भक्त उताहुल रहैए जे करवन शिवजीक पट खुजतैन जे दर्शन करब, तहिना रही। जीवने-दर्शन ने उच्च कोटिक दर्शन छी...।

निरधनक पट खुजल–

“भाय सहाएब, हमरा माथमे चानन आ हाथसँ टौहकी बनबैत देख जरूर तोहर मन हँसैत हेतह, मुदा...।”

निरधनक बात सुनि मन सहैम गेल। सहैम ई गल जे मनक बात निरधन केना बुझि गेल। किछु फुरबे ने करए जे आगू किछु पुछि कऽ बुझी आकि ओ अपने फुरने बाजत। भरिसक मनोक अपन बाट-घाट छै, जैठाम मन मनसँ मिलबो करैए आ छुटबो करैए।

कहलिऐ–

“निरधन भाय, जखन संगी सबहक बीच सत्संगमे जाइ छह तखन तँ काजो ने..?”

हमर बातक इशारासँ निरधन गम्भीर भऽ गेल। मुहसँ अनायास फुटलै–

“भाय सहाएब!”

‘भाय सहाएब’ सुनि अपना मनमे भेल जे भरिसक वेचाराकेँ जिनगीमे धक्का लगि रहल अछि। नजैर पाछू घुसकल, जे निरधन बुझि गेल। बाजल–

“भाय सहाएब, बाँसक चारियेटा वौस बनाएल होइए। छिट्टा-पथिया आ टौहकी-पहटा। जँ टौहकी बनाएब छोड़ि देब तँ अपनो आसीन-कातिकक आमदनी मरि जाएत। ओना, टौहकी बना बेचबो करै छेलौं आ अपनो बाधक पानिक बहावक कटारिमे लगा मछवारियो करै

छेलौं। मछवारिक आमदनीकेँ तँ अपने छोड़ि देलिऐ मुदा जे साँकठ अछि, जेकरा टौहकीक खगता छै, ओ केतएसँ आनत। गाममे हमहींटा बनबै छी।”

मुड़ी डोलबैत निरधनक सुकृत्यकेँ स्वीकृत करैत बजलौं–

“तखन तँ... ।”

हमर स्वीकृत पेब निरधनक मन जेना फुलाए लगलै तहिना फुलाइत बाजल–

“भाय सहाएब, एते दिन अपना-ले केलौं आब अनका-ले करै छी।”

मन मानि गेल जे निरधन समाजक जरूरतमन्द लोक छी, जेकरापर समाजक कारोबार ठाढ़ अछि। जुड़ाएल मन बिहुँसि उठल, पुछलिऐ–

“निरधन, परिवारमे के सभ छह?”

‘परिवार’ सुनिते निरधन रौदाएल फुल जकाँ कुम्हला गेल। बाजल–

“भाय सहाएब, तीन भाँइक भैयारीमे छी। लुल्ह-नाँगर बुझि दुनू भाए भीन कऽ देलक। तेही दिन बुझि गेलिऐ जे दुनियाँमे केकरो कियो ने छइ। छातीमे मुक्का मारि जिनगीक खेलौना हाथमे लेलौं। अपनो गामक लोक सभ आ आनो गामक लोक सभ भदवारिमे पटुआ काटै, धान रोपैले आ छठिक परात कातिकमे धान काटैले मोरंग जाइ छला। हमहूँ हुनके सभ सेने दू साल ओतए खटलौं। हमरा बुते भानस कएल नइ हुअए मुदा टहल-टिकोरा तँ करबे करिऐ।”

बजैत-बजैत निरधन अगिला बाते बिसैर गेल। अपने मने मुँह बन्न भऽ गेलइ। एकाएक बोलती बन्न होइत देख मनमे भेल जे या तँ तेल-पेट्रौल सठि गेलै वा कोनो खच्चामे लसैक गेल। हर बहैत बरदक नाङैर पकैड़ जहिना हरवाह टीटकारी दइए तहिना बजलौं–

“निरधन भाय, राज मोरंगक बात अखन तक कहियो कहाँ बजलह?”

मोरंगक बात सुनिते निरधनक मनक वीणा गुनगुनाएल–

“देखबै शकतिया हम गंगा महरानी-के...। ऐह! चुहरो ठीके चुहरे रहइ। चुहरा रहै कि चुहरखोर रहै से ते ओ जानए, मुदा रहै धरि छतिगर लोक।”

बीचमे रोकैत निरधनकेँ कहलिऐ–

“आइए तक गाममे छी, ओते समय नइ अछि। परिवारक जे बात कहए लगलह से खाली कहि दैह।”

हमर बात सुनिते निरधन पाछू उनैट-उनैट ताकए लगल। समाजमे बेसी लोक ओहन अछि जे माए-बाप छोड़ि अपन धिया-पुता आ पत्नी धरिकेँ परिवार बुझैए तँ एहनो तँ ऐछे जे धियो-पुतो छोड़ि अपन अपन पत्नियेँटा केँ परिवार बुझैए। मुदा जे असगरे अछि, तखन परिवार की भेल...।

निरधनकेँ सकदम देख बुझि पड़ल परिवारकेँ बिसैर ने तँ गेल अछि। मन पाड़ैत बजलौं–

“मोरंग जे धान काटए जाइ छेलहक से कमेबो करै छेलहक कि तनडेली करए जाइ छेलहक?”

निरधनक मन मोरंगक डोरकेँ पकड़ने ओइ परिवार लग पहुँच गेल, जइ परिवारमे, जनिजाति सभकेँ बाँसक छिट्टा-पथिया-ढकिया इत्यादि बनबैत देखने। मन पड़लै सिजिने-सिजिने मोरंग जा कऽ धानो काटै छेलौं आ ओइ परिवारमे जा-जा देखबो करै छेलौं। ओही परिवारमे ने बाँसक सभ चीज बनेनाइ सीखलौं आ ओम्हरेसँ एकटा खुखड़ी कीनने आबि मोरंग जाएब छोड़ि गाममे बाँसक कारोबार केलौं। ओना, बाँसक हजारो रंगक कारोबार अछि, मुदा से नइ छिट्टा-पथिया इत्यादि-इत्यादि बनाएब

शुरू केलौं... ।

ओना, समाजमे बेसी लोक, बेसी लोकक जिनगीक बाट रोकैये पाछू लागल अछि, मुदा एकरो नकारल तँ नइ जा सकैए जे आगू दिस बढ़ौनिहार नइ अछि। परिवारसँ समाज धरि एहेन संस्कार बनि गेल अछि जे माइयो-बाप ओही बेटा-बेटीकेँ कोनो काज अढ़बैत जे दौड़-दौड़ करैत आ जे से नइ करैत तेकरा अढ़ाएबो छोड़ि दइत। रचनोक क्षेत्र लिअ। अहाँ कविता लिखै छी तँ सइयो-हजारो रचनाकार शुभ बात कहबे करता जे अहाँक पेनी कलम अछि, जँ कथो आ उपन्यासो दिस बढ़ैत तँ समाजमे धमगज्जर भऽ जाइत। दोहरबैत बजलौं–

"निरधन, परिवारक बात नइ बजलह?"

समगम होइत निरधन बाजल–

"भाय सहाएब, की कहब..!"

निरधन चुप भऽ गेल। अगुताइत बजलौं–

"निरधन भाय, जाइ छी। आब फेर कहिया भेँट हएब कहिया नइ। आकि नहियेँ हएब तेकरो ठेकान नहियेँ अछि, मुदा हमर बात बाँकीए रहि गेल।"

'बाँकीए रहि गेल' सुनि निरधन बाजल–

"भाय सहाएब, की कहब अपन आ की समाजेक कहब। लुल्ह-पांगुर बुझि दुनू भाँइ कात कऽ देलक मुदा समाजमे कियो किछ ने बाजल आ ने भइये भाए बुझलक। असगरक पेट बेसी भारियो ने अछि, कोनो कि हाथी-घोड़ाक छी, लऽ दऽ कऽ एक बीतक अछि, अपन भार अपने उठा अखनो जीबै छी... ।"

बिच्चेमे मुहसँ निकैल गेल–

"तखन तँ देशक एकटा परिवारक भार असगरे उठौने छह।"

हँसैत निरधन बाजल–

“इन्दिरो अवासक घर ऐ दुआरे ने भेल जे सभ कहलक ओ बबाजी आदमी छी, घर लऽ कऽ की करत।”

❑ **साभार : एगच्छा आमक गाछ**

रमैत जोगी बोहैत पानि

की मनमे एलैन कि नहि, एकाएक राधाकान्त बाबा घर-परिवारसँ भागि जाइक मन बना लेलैन। ओना, समाज तँ समाज छी जे खाइकाल वौसैए, पड़ाइ-काल वौसैए, रूसलमे वौसैए, नहि जानि आरो कोन-कोन-काल वौसैए। मुदा से राधाकान्त बाबाकेँ कियो नै वौसए एलैन। ओना, मनमे रहैन जे कियो औता तँ अपन मनक बेथा कहबैन। केना नहि कहिऐन! उपदेश झाड़लासँ झड़ै छै आकि उपैत केलासँ। मुदा मनक बात मनेमे अँतरी जकाँ घुरियाइत बहत्तैर हाथक भऽ गेलैन। केकरो नइ देख फेर मनमे उठलैन जे जखन समाजे नहि, तखन परिवारक केते आशा? बड़ करत तँ मुँहमे आगि धरौत, कठियारी के जाएत? तहूमे तेहेन चालि-ढालि सभ धेने जाइए जे एको दिन रहब की जहलसँ कम अछि..! मुदा तैयो राधाकान्त बाबा आशामे रहैथ जे परिवारोक कियो जँ वौसए चलि औत तँ वौसा जाएब। अनेरे ऐ बुढ़ाड़ीमे केतए वौआएब। मुदा आशा अशे रहि गेलैन। ओना, अन्त-अन्त धरि आशा रहैन जे आन-आबए वा नहि, मुदा..?

दादी तँ दादीए भऽ गेली। सृजनकर्ता कुम्हार बरतन गढ़ि ओकर मुँह-कान नै सोझ करए, तँ केहेन बरतन बनत? तहिना दादी अपना बोनमे हराएल। किए वौसए औतैन। तहूमे कोनो कि हराएल बात अछि जे

मरैबला मरबे करैए आ चुड़ियो-सिनूर फोरि-मेटा जीबैबला जीबे करैए। मुदा जीबैक जगह तँ चाही...।

दरबज्जासँ उठि राधाकान्त बाबा कम्मरक मोटरीमे लटकैत कमण्डल कान्हपर लैत ओसारसँ निच्चाँ उतरला कि पोता देखलकैन। देखते दौगल आबि पाछूसँ मोटरी पकड़ैत कहलकैन-

"केतए चललह?"

बहैत पवित्र धारक स्नान जकाँ राधाकान्त बाबा हरा गेला। मनक बेथा मनेमे गुमसैड़ प्रेमक पेंपी बनि मुहसँ निकलए लगलैन। मुदा किछु उत्तर नहि पाबि पोता कहलकैन-

"हमहूँ जेबह!"

संगी पाबि बाबा उत्तर देलखिन-

"रमैत जोगी बहैत पानि..!"

❑ **साभार : बजन्ता-बुझन्ता**

पनचैती पनपना गेल

जेठ मास अन्त होइ-होइपर छल मुदा पूरनिमा नइ भेने सम्पन्न नहि भेल छल। ओना, परसुए आद्रा चढ़ि गेल मुदा छी जेठे। पूरनिमो काल्हिये छी। जनतंत्र शासन छी तँए बहुमतसँ जेठकेँ समाप्ते बुझल जेबाक चाही। मुदा सेहो जँ मानि लेब तखन पतरा-पुराण तँ मारल जाएत किने तँए जेठे मानब बेसी नीक।

दिनक एके बजेमे पता चलल जे उचितलाल भायकेँ तीनू भाँइ–अर्जुन, नकुल आ सहदेव मारबो केलकैन, गलहत्थो देलकैन आ गरदेन पकैड़ मोकबो केलकैन, तेकरे पनचैती हएत। ऐठाम एकटा बात जे अस्पष्ट अछि ओकरा स्पष्ट कऽ दइ छी। तीनू भाँइ–अर्जुन, नकुल आ सहदेवकेँ महाभारतक पात्र नहि बुझबैन, ओ सिंहेश्वर कक्काक अपन देन छिऐन। देनक कारण छैन जे जहिना रामायण पढ़निहार अपन धिया-पुताक नाओं रामायणिक पात्रानुसार रखै छैथ आ हनुमत भक्तिभावसँ जीवन यात्रा करै छैथ तहिना सिंहेश्वर काका महाभारत पढ़निहार छैथ, तँए दुनू परानी मिलि अपन धिया-पुताक नाओं महाभारतक पात्रानुकूल रखने छैथ आ व्यास भक्तिक रसपान करैत जीवन यात्रा करै छैथ। अनेरे किए ओ वीणा एकतारा लऽ कऽ नारदजी जकाँ अकास-पताल घुमता, तँए नारदीय भक्ति-भावसँ सिंहेश्वर काका अपनाकेँ परहेज केने छैथ।

सिंहेश्वर काका दू भाँइ छैथ, दुनू भाँइमे बीस सालसँ भिनौजी छैन। जोतसीम खेत बाँटि नेने छैथ मुदा गाछियो-कलम आ फुलबाड़ियो शामिले रखने छैथ। तइ पाछू दुनू भैयारीक अपन सोच-विचार छैन। सोच ई छैन जे खेती तँ सभदिना छी तेँ अपन-अपन करबो करब अछि आ अपन-अपन भोगबो करब अछि, मुदा गाछी-कलम तँ भलेँ अपन रोपल किए ने छी मुदा ओकरा फड़ाएब तँ अपना हाथमे अछि नहि, सालमे एकबेर फड़त कि नइ फड़त, तहूमे जँ एक दियादक गाछ फड़ि जाए आ दोसर दियादक गाछ फड़बे ने करए, तखन तँ खाइ-पीबैमे दू रंग भऽ जाएत, तँए ओकरा एकरंग रखैक नीक रस्ता यएह अछि जे गाछीकेँ शामिले राखू, फले बाँटि लेब। तीनटा गाछ मालदहक छैन, आद्रा पाबैन दुआरे वएह आम दुनू भैयारी मिलि तोड़ने छला, ओही आमक हिस्साक बँटवारामे उचितलाल भाय पंच छैथ।

एक तँ सिंहेश्वर कक्काक गलती भेलैन जे जखन अपन घरक चीज (आम) छेलैन तखन किए ने अपने दुनू भैयारी मिलि एक भैयारी आमक जोड़ा लगा-लगा दोसर भैयारीक हाथमे देने जइतैथ आ जिनका हाथमे आम जइतैन ओ दुनू दिस केने जइतैथ। मुदा से भेल नहि। नइ होइक कारण बुझले अछि, एकटा मौगीक खातिर महाभारत भऽ गेल, एकटा मौगीक खातिर अयोधियासँ लंका तक उजाड़ भऽ गेल, तखन जँ गामक भैयारीमे पंच नहि आबैथ सेहो मौगुपने हएत किने।

दुनू भैयारी सिंहेश्वर काका उचितलाल भायकेँ आमक बँटबाराक पंच मानलैन। मानियेँ नहि लेलैन, जा कऽ कहबो केलखिन जे तीन गाछ मालदह आम आद्रा पाबैन-ले तोड़लौं हेन से अपने पंच बनि बाँटि दियौ।

उचितलाल भाय ओना, समाजिको पनचैतीमे सेहो जाइते छैथ मुदा आम-कटहरक पनचैतीक तँ विशेषज्ञे छैथ। तँए बेसी लोक हिनके पंच मानै छैन। पंचोक तँ अपन ट्रेनिंग उचितलाल भायकेँ भेटले छैन जे नइ लड्डू तँ लड्डूक झड़ुओ जँ भेटल तैयो बहुत भेल। आद्रा पाबैन छीहे,

समयपर बरखा भेने आमक सुआदो बनियेँ गेल छै, जँ लाबो-दुआ भेटल तैयो पाबैनक कोन बात जे पाँच दिन आगुओ तक दुनू साँझ चलबे करत। अपन मजबूरी देखबैत, पुन: विचारकेँ संशोधित करैत उचितलाल भाय आमक बँटबाराक मान मानि गछैत बजला- "जखने गाछसँ आम उतैर जाए, जानकारी देब, पीठेपर पहुँच दुनू भाँइक बीच आम फुटा देब।"

सएह भेल, आमक ढेरीसँ आम निकालि-निकालि उचितलाल भाय दुनू दिस बाँटए लगला। दहिना हाथसँ गोलगर आ बामा हाथसँ चेपगर आम उठा-उठा दुनू दिस बाँटए लगला। गोलगर-चेपगरक माने भेल पैघ-छोट। कुरुक्षेत्रक रणभूमि जकाँ एक दिस सिंहेश्वर कक्काक तीनू बेटा आ दोसर दिस बघेश्वर कक्काक तीनू बेटा पतियानीमे ठाढ़ छल।

उचितलाल भाइक पंचनामा हाथपर अर्जुनक नजैर अँटकल रहइ, ओ बामा-दहिना हाथक गोलगर-चेपगर आम देख नकुलकेँ आँखिक इशारा देलक। नकुलो तँ पकिया उल्था बुझू, सहदेवक, आँगुर पकैड़ जहिना पछबरिया बेपारी माने माड़वारी अपन धोतीक फाँड़मे घोंसिया दोसर बेपारीकेँ आँगुरपर हिसाब जोड़ि बुझा दइ छैथ तहिना नकुलक हिसाब सहदेव बुझि गेल। एके बेर तीनू भाँइ अरजैत-गरजैत अर्जुनक संग नकुलो आ सहदेवो उचित भाइकेँ गोलिया लेलकैन। तेकरे पनचैती हएत।

पाँच बजे बेरुका उखड़ाहा पनचैतीक समय आ पंचायत भवन स्थान निर्धारित भेल छल। ओना, धरमागती बात ईहो छल जे उचिललालपर अपनो आक्रोश छल, मुदा ऐठाम तँ ने तीनमे छेलौं आ ने तेरहमे, तँए सुनिये कऽ ने संतोख करए पड़त। ओना, संतोखो तँ सेतोखे छी, केतो धारक ऊपर देने चलैए आ केतौ धरती छुबैत तरो देने चलिते अछि। मुदा जे अछि ओ तँ ओइठाम अछि, ऐठाम तँ उचित भाय गामक सभदिनो आ सभठीमोक पंच छथिऐ तँए अपन पनचैती केहेन भेलैन सएह बुझैक जिज्ञासा मनमे रहए।

अपन घरसँ पंचायत भवन उत्तर आधा किलोमीटरपर अछि। बीचमे एकटा चौक छइ। चौकक माने दुनू अछि, जँ पाँच-दसटा दोकान खुजि गेल तँ ओहो चौक भेल आ जैठाम चारू दिससँ रस्ताक मिलानी भेल सेहो चौक भेल। मुदा से नहि, ऐठाम दुनू अछि।

कनसोह लइले पाँचे बजे चौकक चाहक दोकानपर जा कऽ बैस गेलौं, आ बिना कारण जनौने 1974 इस्वीक इमरजेंसीपर भाषण दिअ लगलौं। मनमे छल जे किए ने सभ बच्चाक सिलेबसमे ऐ प्रश्नकेँ राखल जाए। एकसूरे दस मिनट बाजि गेलौं। तही बीच रंगलाल भाय पनचैतीसँ घुमल मुँह लटकौने पहुँचला। ओना, रंगलाल भाय ने गामक जितुआ पंच छैथ आ ने मनौआ पंच छैथ मुदा तैयो पनचैतीमे ऐ दुआरे गेल छला जे अर्जुन तीनू भाँइ आबि कऽ कहलकैन। भाय, समाज छी! समाजमे रहै छी तखन जँ समाजक बात नहियोँ मानब सेहो केते नीक हएत। ओना, रंगलाल भाय अपना गामक समाजकेँ बिनु डोराडोरिक समाज बुझै छैथ, तँए पनचैतीमे नहियेँ जाइ छैथ, मुदा अर्जुन तीनू भाँइपर बेकतीगत बिसवास रहैन तँए गेल छला। ओना, अर्जुनकेँ पनचैतीसँ पहिनहि कहि देने छेलखिन-

“बौआ, बिना अरजने ने मर्जन होइए आ ने बिना मर्जने तर्जन होइए, तँए पंच बनब तँ भारी नइ भेल मुदा हँसेरी बनब तँ भारी भइये जाएत किने।”

रंगलाल भाइक बात सुनि अर्जुन तँ चुपे रहल, किए तँ ओकरा दुनू हाथमे मुंगबा रहइ, मुदा सहदेव बाजि चुकल छल-

“भाय साहैब, अर्जुनक पनचैती छिऐ।”

रंगलाल भाइक लटकल मुँह देख बजलौं-

“भाय साहैब, बड़ तबाही बुझि पड़ैए! केतौ बाहरसँ अबै छी?”

रंगलाल भाय चुप्पे रहला तँए फेर बजलौं-

“अच्छा पहिने चाह पीबू पछाइत कुशल-छेम करब।”

बिना किछु बजने रंगलाल भाय लगमे आबि बैसला। बैसते दोकानदार चाह नेने आबि हाथमे धरा देलकैन। ओना, गुलाबक फूल वा कोनो आनो फूलक जँ ऊपरका रूप कुरूपो भऽ जाइ छै, आ पानिक रस पबिते माने धोला, भिजौला वा सींचलासँ अपन रंगमे रंगि जाइए तहिना रंगलाल भाय रंगि गेला। ताबे चाहो पीब लेलैन। बजलौं-

“भाय साहैब, पंचायत भवनपर पनचैती छी से किछु बुझबो केलिऐ?”

निछोह दौड़ल आएल कोनो धिया-पुताकेँ एकाएक कोनो बात पुछबै तँ ओ जहिना हकैम-हकैम बजैए तहिना रंगलाल भाय बजला-

“ओही पनचैतीसँ अबै छी।”

जिज्ञासा जगल। पुछलयैन- “की भेल?”

रंगलाल भाय बजला-

“हएत की कपार! अर्जुन तेहेन अपन पक्ष रखलक जे कोनो पंचकेँ उठबे ने केलैन।”

आरो जिज्ञासा बढ़ल। बजलौं- “से की भाय साहैब?”

रंगलाल भाय बजला-

“अर्जुन उचितलालकेँ पुछलकैन जे आम सन अदना वस्तुपर जखन अहाँक धीर्त नइ रहल तखन समाजक उचित-कल्याणमे धीर्त रहत।”

❑ **साभार : गपक पियाहुल लोक**

जेठुआ गरदा

लूरिपुरा गाम काजे जाएब रहए, जेठ मास भोरुए पहर गामसँ विदा भेलौं। कनी बेसी दूर रहने जेठुआ गरदाक धुरखेलमे पड़िए गेलौं।

जमुना धारक ओइ पार लूरिपुरा गाम अछि, जइ गाममे दुरवासा काका आ दुरदिनी काकीक घर सेहो छैन। हुनके ऐठाम जाएब रहए। ओना, अखुनका हिसाबे हमरो गाम कोनो बेसी हटल नहियेँ अछि, किएक तँ देखबे-सुनबेटा नइ, घर बैसल पाँचो मिनटमे कोन-कोन देश आ केतए-केतक लोकोसँ गपो होइए आ सवारियो तेते फड़ि गेल अछि जे हजार कोसक कोनो महते ने अछि, चाह-पान पीबै-खाइले, गामक चौक-चौराहा जकाँ लोक आनो-आनो देश जाइते अछि। तैठाम साते-आठ कोस हटल गाम, जेतएसँ पाँच बजे भोरे पएरे विदा भेलौं। मुदा बरह-बजिया विर्ड़ोओ आ जेठुआ गरदोमे पड़िए गेलौं। एक तँ ओहिना केतए-कहाँसँ आएल पछबा हवाक झोंकी जे ठाम-ठाम खेतोमे आ रस्तोपर मोइन फोड़ि रहल अछि माने जहिना पानि चकभौर लैत धारमे मोइन फोड़ैए तहिना हवाकेँ सेहो फोड़ि विर्ड़ो-दानो भइये जाइए।

एक तँ अहुना धारऽ-कातक गाम, तैपर बलुआहा रस्ता, केतौ धँसल, केतौ टुटल तँ केतौ बगलक खेतबलाक कोदारिक छाँटल, तँ केतौ अड़कन-मड़कनक ढेरीसँ घेराएल। ओना, लूरिपुरासँ पाछूए, माने दस

बजेक करीबमे डेढ़-दू कोस पाछूएसँ ओहन रस्तासँ भेँट भऽ गेल मुदा रौदो आ हवोक ओहन तेज गति नहियेँ आएल छल तइसँ टपैमे बेसी बाधा होइत, मुदा जमुना धारक किनछेर लग पहुँचैत-पहुँचैत जेठुआ धुड़खेलसँ भेँट भइये गेल। ओना, केतबो धुड़खेलक हवा-विहाड़ि किए ने रहए, मुदा मनमे ईहो बिसवास तँ बनले रहए जे जैठाम काज अछि ओहो लगिचाइए गेल अछि। होइतो अहिना छै जे रस्ता केहनो गड़ूगर किए ने टपऽ पड़ए मुदा अपन गनतव्य स्थानपर पहुँचते मन खुशीसँ खुशीआइए जाइ छइ। से आशा मनमे रहबे करए। जमुना धार टपिते एकटा चौड़गर रस्ता जे लूरिपुरा होइत पछिम मुहेँ दूर तक गेल अछि। गामो तेहेन घनगर नहियेँ, मुदा धारक कातक जेहेन गाम होइ छै, तइमे कमियोँ नहियेँ रहइ। काठक पहियाक गाड़ी, बरद बहलमानक बले चलिते अछि। जइसँ गामक रस्ताक कोनो दशा बाँकी नहियेँ छइ। एक तँ बलुआहा माटि तैपर केतौ खाधि तँ केतौ रस्ता-कातक पानिक कल लग खच्चा, मुदा किछु छी तँ गामक सार्वजनिक सम्पैत कहियौ आकि सरकारी सड़क, छी तँ वएह। मुख्य सड़कसँ एकपेरिया फुटल रस्ता, ओना, टोले-टोल सेहो एकपेरिया फुटले अछि, ओही रस्ता कातमे दुरवासा कक्काक घर। बारह बीतैत-बीतैत दुरवासा काका ऐठाम पहुँच गेलौं।

आने गाम जकाँ लूरिपुरोबला सभ रंगक काज अपना-अपना विचारे अपना-अपना लूरिए-बुधिये अपन-अपन करिते अछि। अपन-अपन सबहक काज तँए केकरोसँ केकरो मतलब बेसी किए रहतै। मतलब तँ बेसी ओइठाँ होइ छै जइठाँ एक रंगक काज वा दसगरदा काज होइ छइ। दुरवासा काका दुरदिनी काकीक किसान परिवार, तीन-चारि बीघा खेत, पाँच गोरेक परिवार, शहर-बजारक तँ जिनगी नहि, जे काजो समटल रहतैन। किसानी जिनगी तँए काजो घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेत-खरिहाँन धरि पसरल छनिहेँ। ओना, देखा-देखी लूरिपुरोबला आने गामबला जकाँ गाइयो-महींस पोसैत, खेतियो-पथारी करैत आ

धारेकातक गाम जकाँ कारोबार आ सवारियो तँ रखनहि अछि। रस्ता-पेरा दुआरे- माने धार-धूरक इलाका रहने- इंजिनक गाड़ियो आ इंजिनक कारोबार नहियेँ तेना भऽ कऽ पकड़ने अछि मुदा थोड़-थाड़ पकड़ने तँ अछिए।

एक गाममे रहितो दुरवासा कक्काक विचारो अपन आ काजो अपना ढंगक छैन। अपना ढंगक काज ई जे दुनू परानीक बीच पँचनामा बँटवारा तँ परिवारक काजक नहि, मुदा परम्परासँ चलि अबैत बेवहारक अनुकूल काजक सीमांकन छनिहेँ। एकर माने ई नइ जे, एक-दोसराक सहयोगी संगी नइ छैथ। रहबो किए ने करता, काज चाहे जिनका सिरे होइ मुदा छी तँ परिवारेक काज, जे दुनू परानी नीक जकाँ बुझितो आ करितो। मुदा एते तँ मने-मन रहबे करैन जे जे-जे काज जिनका सिरे अछि ओ ओइ-ओइ काजक जवाबदेह भेला, आ परिवारक दोसर-तेसर ओइ काजक सहयोगी भेलौं, तँए वैचारिक मतभेदक प्रश्नक जड़िए ने केतौ अछि।

आन जकाँ परिवारमे केतौ गुमा-गुमी नहि जे, कियो केकरो काज बुझबे ने करत। पोखेरक पानि जकाँ जेहने घाट परक तेहने जाइठ लगक...।

..अपना ढंगक जिनगी तँए दुरवासा काका गाममे रहितो गौंआँक संग केतौ हटि, केतौ सटि आ केतौ-केतौ हटि-सटि कऽ अपनो चलि रहला अछि आ परिवारो चलि रहल छैन। हटल केर माने भेल जे जैठाम नोकरियो आ बहरवैयो अपन खेतमे ओहन-ओहन बोन-झाड़ लगौने छैथ, जेकर (लकड़ीक) पाइक मोल तँ अछि मुदा फल-फलहरीक मोल नहि अछि। मुदा से नै दुरवासा काकाकेँ बिसवास बनल छैन जे बच्चाकेँ माने विद्यार्थीकेँ कागज-कलम किताबक खगता तँ ऐछे, मुदा केहेन लिखनिहार-पढ़निहारकेँ केहेन कलम कागज आ केहेन किताबक खगता अछि, ओइ अनुकूल ओकरा हेबा चाही। ई नइ जे बचकानी बच्चाकेँ

हजार रूपैआबला कलम आ आन-आन देशक डिजेनगर किताब दऽ दिऐ। एहने सोच रहने गाममे शीशो-सखुआ-सागवानक बोन सेहो अछि, आम, कटहर, लताम, बेल, धात्रीक बोन सेहो आ दारीम, नेबो इत्यादिक झाड़ो अछिए।

दुरवासा काकाकेँ दूटा बेटा, विलास आ विकास। ओना, विलास जेठ, विकास छोट अछि मुदा दुनू नबालिके। जहिना सभ परिवारमे बालिक भेने बेटा पिताक विचारमे अबैत आ नबालिक रहने माइक विचारमे रहैत तहिना दुरवसो कक्काक रहलैन।

ओना, ऐ-बेरक भोँटर लिस्टमे नाओं आबि गेने विलास बालिक भऽ गेल मुदा पिताक बात-विचारमे नइ ऐने पिताक नजैरमे विलास नबालिके छल, तँए कोनो काजक भार दुरवासा काका विलासकेँ नइ देने। ओना, लाजक पच्छे बुझू आकि लूरिक पच्छे, कनी-मनी विलास पितोक संग काजमे पुरिते अछि, मुदा बात विचारमे माइयेक संग बेसी रहैए। प्रश्न तँ परिवारमे जटिल ऐछे जे जैठाम पिताक मन दूर देशमे बसव छेलैन तैठाम माइक मन दूर-दिन बीताएब छेलैन।

हवाक झोंकमे किसान परिवार सभकेँ खेती करैले बैंक-कर्जक घोषणा केलक। घोषणा ईहो केलक जे जेकर नाओं भोँटर लिस्टमे आबि गेल, ओकरा कर्ज भेट सकै छइ। ओना, ऐ बातक घोषणाक भनक दुरवसो काकाकेँ लगलैन, मुदा अपन समटल खेती, समटल लूरिक संग समटल श्रमक संग चलिए रहल छैन तँए बैंकक लौनक खगता नहियेँ बुझि पड़लैन। संगे मनमे ईहो रहबे करैन जे माता-पिताकेँ पार-घाट लगा कर्ज चुकाइये चुकल छी, पत्नी कोनो करजे ने भेली, तखन बँचल बेटा-बेटीक कर्ज। सेहो तँ ओकाइत भरि कइये रहल छी, किछु दिनक पछाइत ओहो सधिये जाएत। तखन अनेरे जे देश-विदेशक कर्जा लऽ कऽ अपनो आ अपन लूरियोकेँ जे कर्जखौंक बना देब से उचित नहि। पसिन्न लोककेँ अपन-अपन होइ छै आ विचार अपन-अपन चलै छै...।

मुदा परिवारमे भीतरिया रोग पैसि गेलैन। भोँटर लिस्टमे नाओं ऐने अपनाकेँ बालिक बुझि विलास खेतीक नाओंपर लौन उठा टी.वी. कीनि लेलक..!

..बैंकसँ लौन उठा विलास बजारेसँ टी.वी. कीनने दोसर-तेसैर साँझ घर आएल। घरपर आबि माएकेँ कहलक-

“माए, टी.वी. कीनिलौं हेन।”

जहिना सभ माए, बेटा-बेटीकेँ नीक खेनाइ, नीक कपड़ा-लत्ता, साज-श्रृंगार देख खुशी होइत तहिना दुरदिनी काकी सेहो भेली। अपना संग पड़ोसियो-पड़ोसनीकेँ टी.वी. देखैक हकार बिलैह एली। एके-दुइए देखनिहार अबऽ लगल जइसँ रातिक दस बजि गेल। दुरवासा काका अपन दिनचर्यानुसार अपनेमे घुरियाइत सुति रहला, जइसँ बुझबे ने केलैन।

भोरे-भोर दुरदिनी काकी टी.वी. नेने दुरवासा काकाकेँ देखबऽ गेली। टी.वी. देखते जेना दुरवासा कक्काक नरसिंह एँड़ीसँ टिकासन चढ़ि गेलैन। मुदा प्रभातवेला दुआरे मुँहमे ताला लगौने रहला।

ओना, आँखिक रंग दुरवासा कक्काक कारीसँ ललौन हुअ लगलैन, मुदा जहिना लोक अपन लहूक घोँट अपने पीब लइए तहिना दुरवसो काका पीबैत बजला-

“ऐसँ नीक रेडी होइतै, जइमे बात तँ सब ऐबतै मुदा अनकर रंग-रूप नइ देखने अपन रंग-रूपमे समटल रहैत।”

पतिक विचार सुनि दुरदिनी काकी बजली किछु ने मुदा मन कलहैन्त गेलैन।

❑ **साभार : पसेनाक धरम**

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर	ओझरी
एगच्छा आमक गाछ	दोती बिआह
प्रीगर शत्रु	कचहरिया रोग
दहेजुआ गाए	नटकिया गति
गठूलाक गारि	भारीपन भार बनि गेल
गण्डा	दिन घटि गेल
अब-तब	पछताबा
झूठे	परिवारक प्रतिष्ठा
उजगी	पागलखाना
जेना हाथी रही	खाए चाहैए
कनी हमरो सुनू	गामे उपैट गेल
नोकरिहारा	खतियाएल घर
अनका बेर ओंघी	किछु ने फुरैए
लगबे ने कएल	तिलकोरक तरुआ
ओ दिन	पटोर
पान पराग	बेटाक चलैत
फोंक मकड़	उग्रघारा
झकास	बेटीक कुभेला
ठोररंगू	दोहरी हाक
हकार	खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

जिगेसा	विदाइ
लेहाज	कर्तव्यपरायन सुगा
जानक मोल	निशाँ
समर्पण	दान-दैछना
स्तब्ध	माइक वचन
भोरक झगड़ा	मथाहाथ
शालीनता	पाइक मोल
पान	गंजन
पवनक विवेक	नमहर फेरा
हरवाहि	अपन काज
समरथाइक भूत	बेटपन
समता	उमेद
सुखाएल सूरत	एकोटा ने
खजाना	कथनी नै करनी
मौसी	मुसाइ पण्डित
कर्ज : 2	घरवास
टुटल मनक जुटान	भूल
ऐंठ साड़ी	बत्तीसोअना
अस्तित्वक समाप्ति	पुरनी भौजी
जाति नहि पानि	अर्द्धांगिनी

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भौँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकैँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्गताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9789388421683